# फरवरी 2017 में सम्पन्न विस्तार गतिविधियों का विवरण

1. **"पश्चिमी राजस्थान उद्योग हस्तशिल्प उत्सव---2017" में शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर की भागीदारी** **दिनांक 3/02/17 से 12/02/17**

दिनांक 03/02/2017 से 12/02/2017 तक जोधपुर में आयोजित "पश्चिमी राजस्थान उद्योग हस्तशिल्प उत्सव 2017 के केंद्रीय पांडाल में शुष्क वन अनुसंधान संस्थान ने स्टॉल लगाकर अपनी अनुसंधान गतिविधियों का प्रदर्शन किया। स्टॉल में विभिन्न पोस्टरों के माध्यम से प्रमुख अनुसंधान उपलब्धियों, शुष्क क्षेत्रों के लिए कृषि वानिकी उपज मॉडल्स, शुष्क क्षेत्रों के लिए शस्य चारागाह उपज मॉडल्स, टिब्बा स्थिरीकरण में सतही वनस्पति का उपयोग, नमक प्रभावित बंजर भूमि का पुनर्वास, जैव जल निकासी से जल भराव क्षेत्र का सुधार (पुनर्वास), जल प्रबंधन, संस्थान द्वारा विकसित प्रौद्योगिकियाँ, संस्थान के शोध प्रभागों का विवरण, बीज एवं कलम द्वारा गुग्गल का प्रवर्धन, गुग्गल नेटवर्क परियोजना, अरडू के क्लोनल प्रवर्धन की ग्राफ्टिंग तकनीक का विकास, उत्पादकता बढ़ाने के लिए ए.एम.एफ. (AMF) / जैव उर्वरक की भूमिका, पादप रसायन मूल्यांकन एवं अकाष्ठ वनोपज (NTFP) का मूल्य संवर्धन, खेजड़ी प्रबंधन, उदगम स्त्रोत परीक्षण, पादप बीजोद्यान एवं आनुवांशिक परीक्षण कार्यक्रम, कायिक प्रजनन विधियों, शुष्क एवं अर्धशुष्क क्षेत्रों में पाये जाने वाले औषधीय पौधों का सर्वेक्षण तथा कृषिकरण, पौधारोपण के लिए सूक्ष्म जल संग्रहण क्षेत्र, राजस्थान और गुजरात के जंगलों में कार्बन सिक्वेस्ट्रेशन (प्रथक्करण), राजस्थान के वनों की मिट्टी की विशेषता और उसका वर्गीकरण, रोपण स्टॉक में सुधार आदि विषयों से संबन्धित जानकारी को प्रदर्शित किया गया।

स्टॉल पर चन्दन (*Santalum album*), अंजन (*Hardwickia binata*), रीठा (*Sapindus mukorossi*), चिरोंजी (*Lanzan buchanania*), सफेदा संकर बीज (*Eucalyptus Hybrid Seeds*), सोनामुखी (*Cassia angustifolia*), धोंक (*Anogeissus pendula*), धावड़ा (*Anogeissus latifolia*), अरडू (*Ailanthus excelsa*), नीम (*Azadirachta indica*), शीशम (*Dalbergia sisoo*), रोहिडा (*Tecomella undulata*), सागवान (*Tectona grandis*), पार्किनसोनिया (*Parkinsonia aculeata*), खेजड़ी (*Prosopis cineraria*), करंज (*Pongamia pinnata*), सुबबूल (*Leaucaena leucocephala*), सरेस (*Albizzia lebbeck*), कचनार (*Bauhinia variegata*), गुलमोहर (*Delonix regia*), बांस (*Dendrocalamus strictus*), चुरेल (*Holeptelia integrifolia*), काला धामण (*Cenchrus setigerus*) व सफ़ेद धामण (*Cenchrus ciliaris*) के बीज, देशी बबूल (*Acacia nilotica*), कुमठ (*Acacia Senegal*), गुग्गल (*Commiphora whightii*), के गोंद, करंज (*Pongamia pinnata*) का तेल, सफ़ेद मूसली (*Chlorophylum borivillianum*), शतावरी (*Asparagus racemosus*), अश्वगंधा (*Withania somnifera*) की जड़ें इत्यादि सामग्री भी प्रदर्शित की गयी।

संस्थान की पौधशाला में तैयार नीम, बादाम, अर्जुन, अमलतास, गुग्गल, बेलपत्र खारा जाल, भद्राक्ष, शीशम, कुमठ, खेजड़ी, मीठाजाल, चन्दन, गूलर, रोहिडा, धोक, केर, वृक्ष प्रजातियों तथा वज़्रदंती, अश्वगंधा, अड़ूसा, सफेद मूसली, धतूरा, शतावरी इत्यादि औषधीय पौधों को रूट ट्रेनर में प्रदर्शित किया गया।

स्टॉल पर संस्थान की अनुसंधान गतिविधियों तथा तकनीक के विवरण वाली सूचना पुस्तिका तथा अन्य जानकारी से संबन्धित विभिन्न प्रकार के पर्चे भी वितरित किए गए।

कृषि वानिकी एवं विस्तार प्रभाग के प्रभागाध्यक्ष श्री उमाराम चौधरी, भा.व.से. सहित विभिन्न शोधकर्ताओं ने स्टॉल पर आगुन्तकों को प्रदर्शनी तथा अन्य वानिकी विषयों पर जानकारी प्रदान की तथा आगुन्तकों की जिज्ञासाओं का जबाब दिया।

स्टॉल के प्रभावी संचालन तथा संस्थान की गतिविधियों से जन समूह को अवगत करवाने का महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व श्री करणाराम चौधरी, अनुसंधान अधिकारी, श्री रतनाराम लोहरा, अनुसंधान सहायक प्रथम, श्री महिपाल विश्नोई, अनुसंधान सहायक द्वितीय, श्री सुनील चौधरी, अनुसंधान सहायक प्रथम, श्री जयप्रकाश दाधीच, अनुसंधान सहायक प्रथम, श्री लखपत सिंह, अनुसंधान सहायक द्वितीय, श्री मनोज चौहान, अनुसंधान सहायक-प्रथम, श्री अमीन उल्लाह खान, अनुसंधान सहायक प्रथम, श्री भेंपाराम, अनुसंधान सहायक द्वितीय, श्री प्रेमराज नागोरा, अनुसंधान सहायक प्रथम, श्री कुलदीप शर्मा, तकनीकी सहायक, व श्री अरविंद चौहान, तकनीकी सहायक द्वारा निभाया गया।

श्री तेजा राम, कार्यालय परिचालक, लादूराम मेहरा, कार्यालय परिचारक,श्री जगदीश प्रसाद, कार्यालय परिचारक, श्री कैलाश चौधरी, एम.टी.एस., श्री कैलाश चन्द्र शर्मा, कार्यालय परिचालक, श्री राजाराम, एम.टी.एस., श्री जीतेश मीणा, एम.टी.एस. ने स्टॉल की देखरेख एवं अन्य व्यवस्था संबंधी कार्य किया।

उत्सव में स्टॉल लगाने की व्यवस्था संबंधी कार्य डॉ. बिलास सिंह, वैज्ञानिक "बी" ने किया।

सुस्वागतम्
शुष्क वन अनुसंधान संस्थान

सुस्वागतम्
शुष्क वन अनुसंधान संस्थान (आफरी)

## 2. प्रसार शिक्षा निदेशालय, कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर एवं कृषि प्रोद्योगिकी प्रबंधन अभिकरण, आत्मा (कृषि विभाग) जोधपुर के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित जिला स्तरीय किसान मेले में शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर की भागीदारी **दिनांक 7/02/2017**

कृषि अनुसंधान केंद्र, मंडोर (कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर) में प्रसार शिक्षा निदेशालय, कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर एवं कृषि प्रोद्योगिकी प्रबंधन अभिकरण, आत्मा (कृषि विभाग) जोधपुर के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित जिला स्तरीय किसान मेले में शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर द्वारा स्टॉल लगाकर संस्थान के विवरण तथा मुख्य अनुसंधान क्षेत्र, विशेषज्ञता एवं तकनीकी सेवाओं की उपलब्धता इत्यादि विवरण वाले पोस्टर तथा अन्य सामग्री द्वारा प्रदर्शनी लगाकर भागीदारी की गयी। प्रदर्शनी में धोक (*Anogeissus pendula*), चन्दन (*Santalum album*), खेर (*Acacia catechu*), अर्जुन (*Terminalia arjuna*) के बीज, धोक, देशी बबूल (*Acacia nilotica*), सालर (*Boswelia serrata*) का गोंद, नीम (*Azadirachta indica*), महुआ (*Madhuca indica*) का तेल, अरीठा ( *Sapindus mukorossi*) के फल, सोनामुखी (*Cassia angustifolia*) की पत्तियाँ, पत्ती पाउडर, बीज, तुम्बा (*Citrullus collocynthis*) का तेल, रतनजोत (*Jatropha curcas*) के बीज का तेल इत्यादि उत्पाद भी प्रदर्शित किए गए।

प्रदर्शनी में गुग्गल (*Commiphora wightii*), नीम, धोक, रोहिडा (*Tecomella undulata*), मीठाजाल (*Salvadora oleiodes*), सतावरी (*Asparagus racemosus*), सदाबहार (*Catharanthus roseus*), अश्वगंधा (*Withania somnifera*), गूलर (*Ficus racemosa*), खेजड़ी (*Prosopis cineraria*), निगुंडो (*Vitex negundo*), अर्जुन (*Terminalia arjuna*), कुमठ (*Acacia senegal*), अमलतास (*Cassia fistula*), बेलपत्र (*Aegle marmelos*), चन्दन (*Santalum album*), केर (*Capparis decidua*), सेमल (*Bombax ceiba*), सफ़ेद मूसली (*Chlorophylum borivillianum*), शीशम (*Dalbergia sisoo*), इत्यादि के पौधों का प्रदर्शन किया गया। कृषि वानिकी एवं विस्तार प्रभाग के प्रभागाध्यक्ष श्री उमाराम चौधरी, भा.व.से. ने स्टॉल पर अगुंतक किसानों,

विद्यार्थियों इत्यादि को प्रदर्शित सूचनाओं और सामग्री की जानकारी दी तथा उनकी जिज्ञासाओं का भी निराकरण किया।

स्टॉल पर संस्थान के अनुसंधान संबंधी विवरण बाली सूचना पुस्तिका, मॉडल नर्सरी की स्थापना तथा सफ़ेद मूसली इत्यादि औषधीय पौधों सहित विभिन्न प्रजातियों के प्रवर्धन, उत्पादन इत्यादि के विवरण वाले परचे सहित प्रचार प्रसार सामग्री भी वितरित की गयी। प्रदर्शनी में श्री तेजा राम का सहयोग रहा ।

### 3. कुंडल अकेडमी ऑफ डवलपमेंट एडमिनिस्ट्रेशन एंड मेनेजमेंट (फोरेस्ट), कुंडल महाराष्ट्र के प्रशिक्षु क्षेत्रीय वन अधिकारियों का शुष्क वन अनुसंधान संस्थान भ्रमण दिनांक 9/02/2017

कुंडल अकेडमी ऑफ डवलपमेंट एडमिनिस्ट्रेशन एंड मेनेजमेंट (फोरेस्ट), कुंडल महाराष्ट्र के प्रशिक्षु क्षेत्रीय वन अधिकारियों के 35 सदस्यीय दल ने श्री अविनाश के. देशमुख फेकल्टी मेम्बर एवं वित्तीय सलाहकार के नेतृत्व में तथा श्री संजय गेरडे, पी.टी.इंस्ट्रक्टर के साथ दिनांक 9/2/2017 को शुष्क वन अनुसंधान संस्थान , जोधपुर का अध्ययन भ्रमण कर विभिन्न जानकारियाँ प्राप्त की। भ्रमण के प्रारम्भ में कृषि वानिकी एवं विस्तार प्रभाग के प्रभागाध्यक्ष श्री उमाराम चौधरी, भा.व.से. ने सभी का संस्थान में स्वागत करते हुए संस्थान तथा संस्थान की शोध गतिविधियों, तकनीक उपलब्धियों आदि की जानकारी पावर पॉइंट प्रस्तुतीकरण के माध्यम से दी। इसके बाद दल ने संस्थान की विभिन्न प्रयोगशालाओं, उत्तक संवर्धन, पारिस्थितिकी प्रभाग की प्रयोगशाला, जी.आई.एस. प्रयोगशाला, वन संरक्षण प्रभाग की प्रयोगशाला, बीजों से संबन्धित उपकरण कक्ष/प्रयोगशाला, अकाष्ठ वनोपाज़ प्रयोगशाला इत्यादि का भ्रमण किया, जहां विभिन्न शोधकर्ताओं ने शोध संबंधी गतिविधियों की जानकारी भ्रमणकारी दल को करायी। भ्रमणकारी दल ने संस्थान में स्थित विस्तार एवं निर्वचन केंद्र का भ्रमण कर वहाँ पोस्टरों इत्यादि के माध्यम से प्रदर्शित विभिन्न सूचनाओं एवं सामग्री का अवलोकन किया। यहाँ पर श्री चौधरी ने भ्रमणकारी दल को

अवक्रमित पहाड़ियों का पुनर्वासन, टिब्बा स्थिरीकरण, जल प्लावित भूमि का पुनर्वासन, कृषि वानिकी एवं चरागाह संबंधी जानकारी करायी तथा वृक्षों का प्रत्यक्ष एवं परोक्ष महत्व बताया तथा पॉलीथीन के दुष्प्रभाव का जिक्र भी किया। भ्रमणकारी दल को संस्थान एवं संस्थान की विभिन्न शोध गतिविधियों आदि से संबन्धित विवरण वाले पर्चे भी वितरित किए।

भ्रमण कार्यक्रम में श्रीमती मीता सिंह तोमर, तकनीकी सहायक एवं श्री तेजा राम का सहयोग रहा।

## 4. मरु वन प्रशिक्षण केंद्र, जोधपुर के वनपाल प्रशिक्षणार्थियों का शुष्क वन अनुसंधान संस्थान भ्रमण  दिनांक 10/02/2017

मरु वन प्रशिक्षण केंद्र, जोधपुर के 82 वनपाल प्रशिक्षणार्थियों ने श्री पूनाराम सिसोदिया क्षेत्रीय वन अधिकारी प्रथम एवं श्री माणक लाल सुथार क्षेत्रीय वन अधिकारी द्वितीय के साथ दिनांक 10/02/2017 को शुष्क वन अनुसंधान संस्थान में स्थित विस्तार एवं निर्वचन केंद्र का भ्रमण कर वहाँ पर विभिन्न प्रकार के पोस्टर आदि से प्रदर्शित विभिन्न शोध गतिविधियों, तकनीक एवं उपलब्धियों से संबंधित सूचनाओं एवं अन्य सामग्री का अवलोकन किया। कृषि वानिकी एवं विस्तार प्रभाग के प्रभागाध्यक्ष श्री उमाराम चौधरी, भा.व.से. ने केंद्र पर अवक्रमित पहाड़ियों का पुनर्वासन, टिब्बा स्थिरीकरण, जल प्लावित भूमि का पुनर्वासन, वन प्रकार, कृषि वानिकी, चरागाह मॉडल इत्यादि से संबंधित जानकारी भ्रमणकारी दल को करवायी। श्री चौधरी ने वनपाल प्रशिक्षणार्थियों को वृक्षों के प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष लाभों की जानकारी अपने संभाषण में दी तथा पॉलीथीन के दुष्प्रभाव का जिक्र अपने संबोधन में किया। भ्रमणकारी दल ने परिसर में स्थित विभिन्न वृक्ष एवं वानस्पतिक प्रजातियों की जानकारी भी प्राप्त की। भ्रमण कार्यक्रम में श्री तेजाराम का सहयोग रहा।

THROUGH BIODRAINAGE

## 5. ग्राम विकास सेवा संस्थान पीपाड़ शहर द्वारा नाबार्ड (NABARD) के सहयोग से आयोजित एक्सपोजर विजिट के तहत किसानों के दल का दिनांक 14/2/2017 को आफरी भ्रमण

ग्राम विकास सेवा संस्थान पीपाड़ शहर द्वारा नाबार्ड (NABARD) के सहयोग से आयोजित एक्सपोजर विजिट के तहत 110 किसानों के दल ने दिनांक 14/02/2017 को शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर का भ्रमण कर विभिन्न शोध गतिविधियों की जानकारी प्राप्त की। भ्रमण के प्रारम्भ में कृषि वानिकी एवं विस्तार प्रभाग के प्रभागाध्यक्ष श्री उमाराम चौधरी, भा.व.से. ने पावर पॉइंट प्रस्तुतीकरण के माध्यम से संस्थान की शोध गतिविधियों एवं विकसित तकनीक की जानकारी दी। इसके बाद कृषकों ने जल, मृदा तथा पोषक तत्वों के परीक्षण, बीजों की सफाई/ग्रेडिंग इत्यादि के उपकरण, वृक्षों के रोगों से संबन्धित अनुसंधान इत्यादि प्रयोगशालाओं का भ्रमण कर अनुसंधान गतिविधियों की जानकारी प्राप्त की। तत्पश्चात कृषकों के दल ने संस्थान के विस्तार एवं निर्वचन केंद्र का भ्रमण कर वहाँ प्रदर्शित अनुसंधान गतिविधियों एवं तकनीक संबंधी सूचनाओं तथा अन्य सामग्री का अवलोकन किया। यहाँ पर कृषकों को अवक्रमित पहाड़ियों का पुनर्वासन तथा टिब्बा स्थिरीकरण एवं जल प्लावित भूमि का पुनर्वासन तथा कृषि वानिकी एवं चरागाह मॉडल तथा राजस्थान के मुख्य वृक्षों इत्यादि की जानकारी करायी गयी।

इसके बाद कृषकों के दल ने संस्थान की प्रायोगिक पौधशाला तथा औषधीय जर्मप्लाज्म का भ्रमण किया जहां पर श्री सादुल राम देवड़ा, अनुसंधान सहायक द्वितीय ने किसानों को पौधशाला तकनीक तथा औषधीय पादपों सहित विभिन्न जानकारी किसानों को उपलब्ध करायी।

## 6. शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर द्वारा वन विज्ञान केंद्र, बीकानेर के अंतर्गत " वानिकी में नवीन तकनीक एवं कृषि वानिकी" विषय पर दिनांक 15 16 फरवरी, 2017 तक दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर द्वारा वन विज्ञान केंद्र, बीकनर के अंतर्गत "वानिकी में नवीन तकनीक तथा कृषि वानिकी" विषय पर भीमसेन चौधरी किसान घर, स्वामी केशवानन्द कृषि विश्वविद्यालय, बीकनर में दिनांक

15 एवं 16 फरवरी, 2017 को वन विभाग, बीकानेर के सहयोग से दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें छतरगढ़ एवं बीकानेर वनमंडल के नव नियुक्त 40 वन रक्षकों ने भाग लिया।

प्रशिक्षण के प्रथम दिन उदघाटन सत्र में उप वन संरक्षक, इन्दिरा गांधी नहर परियोजना, बीकानेर श्रीमती मनाली सेन ने प्रशिक्षणार्थियों से प्रशिक्षण में दी जाने वाली जानकारी को सीखने का आहवान किया। तकनीकी सत्र में कृषि वानिकी एवं विस्तार प्रभाग की वैज्ञानिक श्रीमती भावना शर्मा ने "पौधशाला एवं पौधारोपण में होने वाले रोगों" के विषय में जानकारी दी। श्री सादुल राम देवड़ा, अनुसंधान सहायक द्वितीय ने "पौधशाला प्रबंध तकनीक, खाद बनाना (कम्पोस्ट तैयार करना) एवं जैविक खाद का उपयोग" से संबन्धित अपने व्याख्यान में रुचिपूर्ण एवं तकनीकी जानकारी दी। कृषि वानिकी एवं विस्तार प्रभाग के वैज्ञानिक डॉ. बिलास सिंह ने "कृषि वानिकी" तथा "भू जल संरक्षण" से संबन्धित पावर पॉइंट प्रस्तुतीकरण के माध्यम से तकनीकी जानकारी प्रशिक्षणार्थियों को दी। इसके बाद कृषि वानिकी एवं विस्तार प्रभाग के प्रभागाध्यक्ष श्री उमाराम चौधरी, भा.व.से. ने "वर्तमान परिपेक्ष्य में वनों का महत्व, प्रत्यक्ष एवं परोक्ष लाभ" तथा "पौधारोपण तकनीक एवं संधारण" पर व्याख्यान दिया।

प्रशिक्षण के द्वितीय दिवस प्रशिक्षणार्थियों को वन विज्ञान केंद्र, बीकनेर एवं वहाँ पर स्थित उच्च तकनीक पौधशाला का भ्रमण करवाया गया। यहाँ पर कृषि वानिकी एवं विस्तार प्रभाग के प्रभागाध्यक्ष श्री उमाराम चौधरी, भा.व.से. ने प्रशिक्षणार्थियों को वन विज्ञान केंद्र, प्रचार प्रसार तकनीक, माइक्रो क्लाइमेट (Micro-climate), लीफ लीटर (Leaf लिट्टर), हयूमस (Humas), पुनरुत्पादन, पौधशाला प्रबंधन संबंधी जानकारी यथा बेड एवं उनके आकार, थेलियाँ, मिश्रण, कटिंग लगाना, उच्च तकनीक पौधशाला प्रबंधन हेतु एग्रोशेड नेट (Agroshed net), रूट ट्रेनर (Root Trainer), धुंध कक्ष (Mist chamber), इत्यादि उच्च तकनीक पौधशाला संबंधी तकनीकी जानकारी व कम्पोस्ट खाद तैयार करना इत्यादि की व्यावहारिक जानकारी उपलब्ध करायी। पौधशाला संबंधी तकनीकी जानकारी उपलब्ध कराने में श्री जयराम ओझा, सहायक वनपाल का भी सहयोग रहा।

इसके बाद इन प्रशिक्षणार्थियों को स्वामी केशवानन्द कृषि विश्वविद्यालय, बीकनर की पौधशाला का भी भ्रमण कराकर विभिन्न प्रजातियों से संबन्धित पौधशाला प्रबंधन का अवलोकन कराया गया। यहाँ पर श्री इंद्र मोहन वर्मा पौधशाला प्रभारी एवं कार्यक्रम समन्वयक (Programme coordinator) कृषि विज्ञान केंद्र, बीकानेर के ने प्रशिक्षणार्थियों को जल्द पौधा तैयार होने एवं कम वज़न वाले कंटेनर, रूट ट्रेनर इत्यादी से संबन्धित जानकारी दी। यहाँ पर प्रशिक्षणार्थियों को बडिंग (Budding), ग्राफ्टिंग (Grafting), दाब लगाना (Layering) की व्यावहारिक जानकारी भी दी गयी।

इसके पश्चात डूंगर कॉलेज, बीकानेर के प्रोफेसर डॉ. प्रताप सिंह ने अपने व्याख्यान में "जैव विविधता" विषय पर रुचिपूर्ण जानकारी प्रशिक्षणार्थियों को करवायी।

समापन सत्र में प्रशिक्षणार्थियों से फीडबेक प्राप्त किया गया। समापन सत्र में मुख्य अतिथि मुख्य वन संरक्षक, बीकानेर श्री दया सिंह दुलड़, भा.व.से. ने प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए कहा की वानिकी का कार्य चुनौतीपूर्ण है लेकिन पुण्य का कार्य है, उनहोंने प्रशिक्षणार्थियों से कहा कि वानिकी कार्य को व्यवहार में लाने अथवा खुद हाथ से इन्हें करने पर इनमें और अधिक निपुणता आती है। समापन सत्र की अध्यक्षता करते हुए डूंगर कॉलेज

के पूर्व प्रोफेसर डॉ. प्रताप सिंह ने प्रशिक्षणथियों का आह्वान किया कि उन्हें हमेशा एक विद्यार्थी की तरह सीखते रहना चाहिए। इसके पूर्व कृषि वानिकी एवं विस्तार प्रभाग के प्रभागाध्यक्ष श्री उमाराम चधारी , भा.व.से. ने दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम की गतिविधियों का ब्योरा प्रस्तुत किया। प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण पत्र भी वितरित किए गए। वैज्ञानिक श्रीमती भावना शर्मा ने समापन सत्र का संचालन किया एवं सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया।

इस दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के आयोजन में कृषि वानिकी एवं विस्तार प्रभाग के श्री रतनाराम लोहरा, अनुसंधान सहायक - प्रथम, श्री महिपाल विश्नोई, अनुसंधान सहायक - द्वितीय तथा श्री तेजाराम का सहयोग रहा।

आफरी

### 7. मरु वन प्रशिक्षण केंद्र, जोधपुर के वनपाल प्रशिक्षणार्थियों का शुष्क वन अनुसंधान संस्थान के प्रायोगिक क्षेत्रों का भ्रमण दिनांक17/2/2017

मरु वन प्रशिक्षण केंद्र, जोधपुर के 83 वनपाल प्रशिक्षणार्थियों के दल ने दिनांक 17/2/2017 को क्षेत्रीय वन अधिकारी द्वितीय श्री माणक लाल सुथार के साथ शुष्क वन अनुसंधान संस्थान के प्रायोगिक क्षेत्रों का भ्रमण कर विभिन्न अनुसंधान गतिविधियों की जानकारी प्राप्त की। कृषि वानिकी एवं विस्तार प्रभाग के प्रभागाध्यक्ष श्री उमाराम चौधरी, भा.व.से. ने भ्रमण के दौरान कृषि वानिकी मॉडल एवं केर ट्रायल सहित प्रकृतिक एवं कृत्रिम वन,

पुनरुत्पादन, जड़ प्ररोह (root sucker), कृषि वानिकी से संबन्धित शोध ट्रायल क्षेत्र, ओद्योगिक अपशिष्ट पानी से संबन्धित शोध ट्रायल क्षेत्र, मीलिया कंपोजिटा (Melia composita) के ट्रायल क्षेत्र तथा विभिन्न वानस्पतिक प्रजातियों इत्यादि जानकारियाँ नवनियुक्त वनपाल प्रशिक्षणार्थियों को करवाई। पारिस्थितिकी प्रयोगिक क्षेत्रों के भ्रमण के दौरान पारिस्थितिकी प्रभाग के अनुसंधान अधिकारी श्री करणाराम चौधरी एवं श्री नरेंद्र कुमार लिम्बा, अनुसंधान सहायक प्रथम ने भी कृषि वानिकी ट्रायल, लाइसीमीटर एवं इससे संबन्धित प्रयोगों तथा अन्य प्रयोगों की जानकारी प्रशिक्षणार्थियों को कराई। भ्रमण कार्यक्रम में श्री तेजाराम का सहयोग रहा।

## 8. प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन केंद्र (Natural Resources Management Centre) वन प्रशिक्षण केंद्र (Forest Training Centre) सोहना, गुड़गांव (हरियाणा) के वन रक्षक प्रशिक्षणार्थियों का शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर का भ्रमण

प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन केंद्र (Natural Resources Management Centre) वन प्रशिक्षण केंद्र, सोहना, गुड़गांव (हरियाणा) के 30 वन रक्षक प्रशिक्षणार्थियों के दल ने क्षेत्रीय वन अधिकारी (Range Forest Officer) श्री नवीन कुमार के नेतृत्व में दिनांक 23/02/2017 को शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर का भ्रमण कर शोध गतिविधियों की जानकारी ली। कृषि वानिकी एवं विस्तार प्रभाग के प्रभागाध्यक्ष श्री उमाराम चौधरी, भा.व.से. ने पावर पॉइंट प्रस्तुतीकरण के माध्यम से प्रशिक्षणार्थी, वन रक्षकों को संस्थान की शोध गतिविधियों तथा तकनीक से संबंधित जानकारी दी। इसके बाद प्रशिक्षणार्थियों ने संस्थान की विभिन्न प्रयोगशालाओं का भ्रमण कर शोध गतिविधियों की जानकारी प्राप्त की।

बाद में भ्रमणकारी दल ने संस्थान के विस्तार एवं निर्वचन केंद्र का भ्रमण कर विभिन्न पोस्टरों के माध्यम से वहाँ प्रदर्शित शोध गतिविधियों और तकनीक से संबंधित सूचनाओं तथा सामग्री का अवलोकन किया। यहाँ श्री उमाराम चौधरी ने इन्हें अवक्रमित पहाड़ियों का पुनर्वासन (Rehabilitation of Degraded Hills), टिब्बा स्थिरीकरण (Sand Dune Stabilization), जल प्लावित क्षेत्रों का पुनर्वासन (Reclaimation of Water logged Areas), कृषि वानिकी एवं चारगाह विकास मॉडल (Agroforestry & Silviculture Model) सहित वहाँ प्रदर्शित विभिन्न सूचनाओं से संबंधित जानकारी प्रशिक्षणार्थी वन रक्षकों को करायी। श्री चौधरी ने भ्रमणकारी दल को संबोधित करते हुए वनों से प्राप्त होने वाले प्रत्यक्ष एवं परोक्ष लाभों के मद्देनजर वृक्ष की महत्ता बतायी तथा पर्यावरण संरक्षण का जिक्र करते हुए पॉलीथीन के दुष्प्रभाव का भी जिक्र किया। भ्रमणकारी दल ने संस्थान की प्रायोगिक उच्च तकनीक पौधशाला का भ्रमण कर पौधशाला प्रबंधन की जानकारी हासिल की। भ्रमण कार्यक्रम में श्री तेजाराम का सहयोग रहा।

--

Thank you
for
not Smoking.

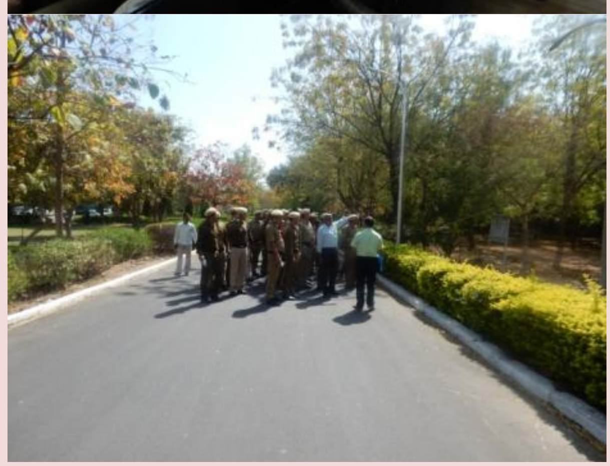

## 9. वन प्रशिक्षण अकादमी (Forest Training Academy) हल्दवानी, उत्तराखंड के रेंजर प्रशिक्षणार्थियों के दल ने शुष्क वन अनुसंधान संस्थान का भ्रमण - दिनांक 23/02/2017

वन प्रशिक्षण अकादमी (Forest Training Academy) हल्दवानी, उत्तराखंड के 38 रेंजर प्रशिक्षणार्थियों (21 पुरुष एवं 17 महिला प्रशिक्षणार्थी) ने दिनांक 23 फरवरी, 2017 को शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर का भ्रमण कर संस्थान की शोध गतिविधियों और तकनीक की जानकारी हासिल की।

भ्रमण के प्रारम्भ में कृषि वानिकी एवं विस्तार प्रभाग के प्रभागाध्यक्ष श्री उमाराम चौधरी, भा.व.से. ने संस्थान की अनुसंधान गतिविधियों तथा विकसित तकनीक से संबंधी जानकारी पावर पॉइंट प्रस्तुतीकरण के माध्यम से दी। इसके बाद रेंजर प्रशिक्षणार्थियों ने संस्थान की विभिन्न प्रयोगशालाओं का भ्रमण कर शोध संबंधी गतिविधियों की जानकारी हासिल की।

ततपश्चात भ्रमणकारी दल ने संस्थान के विस्तार एवं निर्वचन केंद्र का भ्रमण कर विभिन्न पोस्टरों के माध्यम से वहाँ प्रदर्शित शोध संबन्धित सूचनाओं एवं अन्य सामग्री का अवलोकन किया। यहाँ पर श्री उमाराम चौधरी ने रेंजर प्रशिक्षणार्थियों को अवक्रमित पहाड़ियों का पुनर्वासन (Rehabilitation of Degraded Hills), टिब्बा

स्थिरीकरण (Sand Dune Stabilization), जल प्लावित क्षेत्रों का जैव विकास से पुनर्वासन (Biodrainage of Water Logged Areas), कृषि वानिकी एवं सिल्विपेस्टोरल मॉडल (Agroforestry & Silvipastoral Model) इत्यादि विषयों से संबन्धित जानकारी करायी। श्री चौधरी ने पेड़ों से प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष लाभ बताते हुए वृक्षों का महत्व बताया तथा पॉलीथीन के दुष्प्रभाव की चर्चा भी की।

भ्रमण कार्यक्रम में श्री तेजाराम का सहयोग रहा।

10. AIIMS जोधपुर द्वारा आयोजित इंडियन पब्लिक हेल्थ एसोसिएशन कान्फ्रेंस (Indian Public Health Association Confrence  IPHA CON 2017) के 8 चिकित्सकों के दल ने दिनांक 24/02/2017 को शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर का अध्ययन भ्रमण किया

AIIMS जोधपुर में आयोजित इंडियन पब्लिक हेल्थ एसोसिएशन कान्फ्रेंस (Indian Public Health Association Confrence IPHA CON 2017) में आए चिकित्सकों के 8 सदस्यीय दल ने दिनांक 24/02/2017 को शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर का भ्रमण कर वन और वानिकी से संबंधित शोध गतिविधियों की वैज्ञानिक एवं तकनीकी पक्षों की जानकारी प्राप्त की। संस्थान के समूह समन्वयक (शोध) डॉ. टी.एस.राठौड़ ने भ्रमणकारी दल को पावर पॉइंट प्रस्तुतीकरण के माध्यम से संस्थान एवं संस्थान की शोध गतिविधियों से संबंधित जानकारी जिसमें संस्थान का अधिदेश (mandate), प्रभाग, अवक्रमित पहाड़ियों का पुनर्वास (Rehabilitation of Degraded Hills), कतिपय वृक्ष प्रजातियों की जैव जल निकास क्षमता (Bio Drainage Capacity of some tree species), जल प्लावित भूमि का सुधार (Rehabilitation of water logged areas), राजस्थान के वनों में कार्बन स्टॉक (Carbon stock in Rajasthan Forests), भू उपयोग एवं भू कार्बन,राजस्थान की वन भूमि का वर्गीकरण, कार्बन स्टॉक एवं मिट्टी के वर्गीकरण के नक्शे तैयार करना, पौधारोपण सामग्री का सुधार (Planting Stock Improvement), देववनों में जैव विविधता (Biological Diversity in Sacred Groves), प्रोवेनेन्स ट्रायल (Provenance Trial), प्रोजेनी ट्रायल (Progeny Trial), क्लोनल ट्रायल (Clonal Trial), अरडू, नीम, रोहिडा, सागवान, खेजड़ी, गुग्गल, मीलिया कंपोजिटा में वृक्ष सुधार कार्य, विकसित वानस्पतिक संवर्धन तरीके (Developed vegetative propogation methods), फंक्शनल जीनोमिक्स एवं बायो इन्फोर्मेटिक्स (Functional Genomics and Bioinformatics), वृद्धि एवं प्राप्ती मॉडलिंग (Growth & Yield modeling), औषधीय पौधे (Medicinal Plants), मूल्य संवर्धन (Value addition), शहरी वन मॉडल (Urban Forestry Model) इत्यादि विषय सम्मलित थे। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. यू.के.तोमर ने जल और पौधों की प्रक्रिया की चर्चा की तथा पारिस्थितिकी पट्टियों (Ecological Belts) को बनाने तथा पादप प्रजातियों के सही चयन के बारे में बताया। डॉ. राठौड़ ने जलवायु परिवर्तन की चर्चा करते हुए बताया कि जिस तरह से संसाधनों क उपयोग हो रहा है, नयी बीमारियों की संभावना बढ़ी है। डॉ. राठौड़ ने अपने प्रस्तुतीकरण में भ्रमणकारी दल से रेगिस्तानी क्षेत्र में वायु द्वारा भू क्षरण के रेत कणों से संभावित बीमारियों के मद्देनजर टिब्बा स्थिरीकरण कार्यक्रम का महत्व बताया। जल प्लावित भूमि के मद्देनजर जल जनित बीमारियों के संदर्भ में जैव जलनिकासी (Bio-Drainage) की चर्चा करते हुए डॉ. राठौड़ ने भ्रमणकारी दल को बताया की किस तरह से पादप, जल प्लावित भूमि पुनर्वासन में मदद कर सकते हैं। डॉ. राठौड़ ने राजस्थान के वनों में कार्बन स्टॉक के संदर्भ में बताया की किस तरह से यह कार्बन स्टॉक जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभाव को कम कर सकते हैं। डॉ. राठौड़ ने चिकित्सकों के दल से प्रजातियों के आपसी साहचर्य, पादपों का प्रबंधन, वानस्पतिक आवरण बढ़ाने हेतु कृषि वानिकी की भी चर्चा की। प्रश्नोत्तर के माध्यम से भ्रमणकारी दल की जिज्ञासाओं का भी समाधान किया गया।

भ्रमणकारी चिकित्सकों के दल ने इसके बाद संस्थान के परिसर का भ्रमण कर विभिन्न प्रकार की पादप प्रजातियों का संस्थान की जैव विविधता का अवलोकन किया। कृषि वानिकी एवं विस्तार प्रभाग के प्रभागाध्यक्ष श्री उमाराम चौधरी, भा.व.से. ने परिसर की विभिन्न प्रजातियों की जानकारी चिकित्सकों को दी। चिकित्सकों के दल ने संस्थान के निर्वचन एवं विस्तार केंद्र का भ्रमण कर वहाँ प्रदर्शित शोध गतिविधियों से संबंधित सूचनाओं एवं अन्य वनोपाज़

सामग्री का अवलोकन किया। यहाँ पर श्री चौधरी ने भ्रमणकारी दल को अवक्रमित पहाड़ियों का पुनर्वासन, टिब्बा स्थिरीकरण, कृषि वानिकी मॉडल तथा अन्य सूचनाओं एवं सामग्री के बारे में जानकारी करायी।

भ्रमणकारी दल ने इसके बाद संस्थान की प्रायोगिक पौधशाला तथा वहाँ स्थित औषधीय उद्यान का भ्रमण किया जहां पर श्री उमाराम चौधरी ने इन्हें पौधशाला प्रबंधन से संबंधित तकनीकी जानकारी तथा औषधीय पादपों की बारे में बताया। श्री चौधरी ने भ्रमणकारी दल को यहाँ पर अपने संभाषण में वृक्षों के प्रत्यक्ष एवं परोक्ष लाभों की जानकारी देते हुए उनका महत्व बताया तथा पॉलीथीन के दुष्प्रभाव की भी चर्चा की।

भ्रमण कार्यक्रम में वैज्ञानिक बी, श्री ए.दुराई तथा सूचना प्रोद्योगिकी प्रकोष्ठ के श्री राजेश मीणा, तकनीकी सहायक का सहयोग रहा।

विस्तार एवं निर्वचन केन्द्र

## 11. भारतीय वन सेवा के 2016 बेच के 43 प्रशिक्षु अधिकारियों का शुष्क वन अनुसंधान संस्थान भ्रमण दिनांक 25/02/2017 -------

दिनांक 25/02/2017 को भारतीय वन सेवा के 2016 बेच के 43 प्रशिक्षु अधिकारियों के दल ने फेकल्टी श्री कानन, भा.व.से. के साथ शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर का भ्रमण किया। संस्थान के समूह समन्वयक (शोध) डॉ. टी.एस.राठौड़ ने पावर पॉइंट प्रस्तुतीकरण के माध्यम से संस्थान एवं संस्थान की शोध गतिविधियों की जानकारी

प्रशिक्षु अधिकारियों को करायी। जिसमें संस्थान के संगठनात्मक विवरण, अनुसंधान फोकस सहित शुष्क क्षेत्रों के लिए कृषि वानिकी मॉडल का विकास, सतही वनस्पति के उपयोग से टिब्बा स्थिरीकरण, क्षारीय भूमि का पुनर्वासन (Rehabilitation of Salt Lands), पौध रोपण एवं वृद्धि के लिए भू एवं जल संरक्षण, अवक्रमित अरावली की पहाड़ियों का पुनःस्थापन (Rehabilitation of Degraded Aravali Hills) कतिपय वृक्ष प्रजातियों की जैव जल निकास क्षमता (Bio Drainage Capacity Of Some Tree Species), जल प्लावित भूमि का पुनर्वास (Rehabilitation of water logged areas), राजस्थान के वनों में कार्बन स्टॉक एवं मिट्टी के वर्गिकरण के नक्शे बनाना (Carbon Stock and Soil Classification mapping), देववनों में जैव विविधता (Biological Diversity in Sacred Grooves), पौधारोपण सामग्री का सुधार (Planting Improvement), अरडु जैसी प्रजातियों में वृक्ष सुधार कार्यक्रम (Improvement works in Ardu like Species) इत्यादि विषय भी सम्मलित थे। डॉ. राठौड़ ने अपने सम्बोधन में पौधारोपण के स्कोप की चर्चा करते हुए गुणवत्तायुक्त पौधारोपण सामग्री की महत्ता बताते हुए वनोत्पाद की मांग एवं आपूर्ती का भी जिक्र किया। डॉ. राठौड़ ने कृषि वानिकी के संदर्भ में इससे होने वाली आय एवं मृदा उर्वरकता (Soil fertilizer) की भी चर्चा की। प्रश्नोत्तर के माध्यम से प्रशिक्षु अधिकारियों की जिज्ञासाओं का भी समाधान किया गया।

इसके बाद भ्रमणकारी दल ने संस्थान के विस्तार एवं निर्वचन केंद्र का भ्रमण कर वहाँ प्रदर्शित शोध संबंधी गतिविधियों एवं तकनीकों से संबंधित सूचनाओं एवं सामग्री का अवलोकन किया। कृषि वानिकी एवं विस्तार प्रभाग के प्रभागाध्यक्ष श्री उमाराम चौधरी, भा.व.से. ने यहाँ पर भ्रमणकारी दल को अवक्रमित पहाड़ियों का पुनःस्थापन (Restoration of Degraded Hills), टिब्बा स्थिरीकरण (Sand Dune Stabilization), जल प्लावित भूमि सुधार (Restoration of Water Logged Areas), कृषि वानिकी एवं चारागाह मॉडल इत्यादि विषय से संबंधित जानकारी प्रशिक्षु अधिकारियों को करायी।

कार्यक्रम का समन्वय एवं संचालन कृषि वानिकी एवं विस्तार प्रभाग के प्रभागाध्यक्ष श्री उमाराम चौधरी, भा.व.से. ने किया। कार्यक्रम में सूचना प्रोद्योगिकी प्रकोष्ठ के श्री राजेश मीणा, तकनीकी सहायक का सहयोग रहा।

DOMINANT FOREST

REHABILITATION OF DEGRADED AREA OF ARAVALI THROUGH SOIL AND WATER CONSERVATION

IGNFA